गृह सज्जा के रंग निर्देश और उनका प्रभाव (मध्यम वर्ग के परिप्रेक्ष्य)

*डॉ. पल्लवी सक्सेना ** डॉ. ऋचा सक्सेना **** कु. रानू सक्सेना

आंतरिक साज–सज्जा एवं रंग रोगन के प्रभाव को विश्व की सभी संस्कृतियों ने एकमत से स्वीकार किया है। दीवारों के रंग ऑखों के माध्यम से मन की गहराई को छू जाते है। ये अपनी अनुकूल व प्रतिकूल रश्मि स्पन्दनों में मानव मन, मस्ति क को विलक्षण ढंग से प्रभावित करते हैं। जम थेरेपी, कलर थेरेपी एवं कलर बाथ उपचार को जहाँ वैज्ञानिकों ने स्वीकार किया है, वहीं घर की आंतरिक सज्जा और रंगो की योजना से गृह–नक्षत्रजन्य बाधा तथा वास्तु दोष दूर होते है। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता।

भारतीय वास्तु–शास्त्र रंगों की इस अवधारणा को अकाट्य तर्कों के साथ स्थापित करता है। यदि व्यक्ति सूर्य गृह से प्रभावित स्थिति में है, सिंह लग्न का है, जन्म कुंडली में सूर्य उच्च का स्वग्रही या अनुकूल स्थिति में है तो घर, होटल एवं दुकान की दीवारों का रंग गोल्डन यलो, सुनहरे वार्डर वाला, हल्का गुलाबी या पीला होना चाहिए। इससे सूर्य सम्बन्धी तत्व एवं शक्तियाँ बढ़ेंगी। यदि व्यक्ति चंद्र तत्व प्रधान है, कर्क लग्न का है, चंद्रमा स्वग्रही या उच्च का है तो उसके घर की दीवारें दूधिया, सफेद अथवा मोतिया रंग की होनी चाहिए। चाँदी जैसे रंग की सजावट सामग्री घर में अधिक होनी चाहिए। यदि व्यक्ति मंगल तत्व प्रधान है, मेष या वृश्चिक लग्न का है, जन्म कुंडली में मेष, वृश्चिक या मकर राशि का मंगल है तो ऐसे अनुकूल मंगल को अधिक अनुकूल करने के लिए दीवारें ऑरेंज क्रिमसन रेड या करो रेड से रंगवानी चाहिए। दरवाजों व खिड़ाकियों के पर्दों में इसी प्रकार के रंगों की प्रचुरता होनी चाहिए। यदि बुध ग्रह से प्रभावित हैं, व्यक्ति की राशि मिथुन अथवा कन्या है या मिथुन–कन्या लग्न में बुध की स्थिति अनुकूल, वृभा या सिंह का होकर स्वग हभिलाषी है तो ऐसे बुध को अधिक अनुकूल बनाने के लिए घर की दीवारों का रंग खासकर परामर्श कक्ष की दीवारें हरे रंग की होनी चाहिए। हरे रंग की रोड, हल्की–भारी तूतिया रंग, मूंगिया रंग इत्यादि किसी भी प्रकार की हो सकती है। यदि व्यक्ति शनि तत्व प्रधान है, मकर–कुम्भ राशि या लग्न का है, शनि स्वग ही, उच्च का अथवा उच्चाभिलाषी (कन्या राशि) का है, तो जातक को अपने घर की दीवारों एवं पर्दों का रंग आसमानी अपनाना चाहिए। काले रंग का प्रतिनिधित्व शनि करता है। चीन में काले रंग की दीवारों वाले होटल या रेस्टॉरेंट मिल जाएंगें, क्योंकि वहाँ काला रंग जल तत्व का प्रतीक माना गया है। भारत में काला रंग अंधकार, उदासी, मृत्यु एवं दुःख का प्रतीक माना जाता है अतः यहाँ इस रंग की दीवारें कोई नहीं रंगवाता। वास्तु शास्त्र की अहमियत प्राचीनकाल से ही रही है। रंगो के सही संयाजन से घर में सुख समृद्वि का आगमन संभव है अतः वास्तु सम्मत रंगों का उपयोग करके आवास का माहौल खुशनुमा बनाया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध मे अध्ययन का उद्देश्य–आवास मनुष्य की पहली आवश्यकता है क्योंकि वह व्यक्ति के समग्र जीवन के क्रियाकलापों का केंन्द्र होता है इसलिए वह अपने आवास की रचना अपनी कल्पना और सुविधानुसार कराता है। आवास निर्माण में वह इतना भावुक हो जाता है कि वह यह भी नहीं देखता कि उसमें वास्तु सिद्धांतों का निर्वाह हो रहा है या नहीं। प्राचीनकाल में भी प्रासाद, भवन, मंदिर, नगर और राजधानियों का निर्माण होता था, जिसमें वास्तु–सिद्धांतों को ध्यान में रखा जाता था। इसी के अनुरूप भवन की बाह्य और आंतरिक सज्जा की जाती थी। प्राचीनकाल में प्राकृतिक सफेद एवं गेरूआ रंग सज्जा में अधिकता से प्रयोग किए जाते थे। आधुनिक युग में नये क त्रिम रंगों द्वारा सजावट की जाती है। परंतु इन रंगों का मानव जीवन पर क्या प्रभाव है? क्या ये रंग वास्तु सम्मत हैं? क्या इन रंगों के प्रयोग से व्यक्ति स्वयं को पहले से अधिक क्रियाशील अनुभव कर रहा है? इन्ही प्रश्नों के समाधान हेतु इस विषय का शोध हेतु चयन किया गया। इस विषय के चयन का उद्देश्य वास्तु–शास्त्र द्वारा गृहसज्जा हेतु दिए गए रंग–निर्देश एवं उनके प्रभाव का अध्ययन करना है।

प्राकल्पना–: शोध अध्ययन के गूढ़ तथ्यों को ज्ञात करने, एवं विवेचना, विश्लेषण तथा निष्कर्ष तक पहुँचने में हमारी प्राकल्पना है कि– 1. आवासीय योजनाओं हेतु वास्तु द्वारा दिए

* अतिथि विद्वान्, शास. कन्या महाविद्यालय, शिवपुरी (म.प्र.)
** अतिथि विद्वान्, शास. कन्या महाविद्यालय, भिण्ड (म.प्र.)
***अतिथि विद्वान्, शा. कमला राजा कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, ग्वालियर

गए रंग–निर्देशों सम्बन्धी जागरूकता समाज के मध्यम वर्ग में नहीं है। 2. वास्तु के प्रतिकूल रंग–योजना का मानव–जीवन पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

अध्ययन पद्धति–: प्रस्तुत शोध वृहद ग्वालियर में किया गया है। तथ्यों के संकलन हेतु प्रश्नावली का निर्माण किया गया जिसमें शोध के उददेश्यों को पूर्ण करने वाले सभी प्रश्नों का समावेश किया गया। प्रस्तुत शोध में पूर्व परीक्षण द्वारा साक्षातकार अनुसूची में पूर्व निर्मित प्रश्नों की पुष्टि और कमी में आवश्यक संशोधन करके इसे अध्ययन के लिए उपयोगी बनाया गया। अध्ययन पद्धति के रूप में द्वैतियक स्त्रोत, अर्थात् पत्र–पत्रिकाओं तथा इंटरनेट का उपयोग किया गया।

निष्कर्ष–: गृह सज्जा के रंग निर्देश और उनका प्रभाव (मध्यम वर्ग के परिप्रेक्ष्य) शीर्षक से किए गए शोध–कार्य में जो निष्कर्ष प्राप्त हुए, उनके अनुसार यह सिद्ध हुआ कि रंग भौतिक विज्ञान के ऊर्जा, प्रकाश और चुम्बकीय–गुरूत्वाकर्षण के सिद्धांत पर आधारित होते हैं। जिस तरह से न्यूटन के गुरूत्वाकर्षण सिद्धांत के अनुसार पेड़ पर लगा फल पृथ्वी की ओर गिरता है, प्रिज्म से निकाला गया सूर्य प्रकाश विभिन्न रंगो को दर्शाता है, वहीं प्रतिकूल रंग–संयोजन व्यक्ति के मन में प्रतिकूल ऊर्जा का निर्माण कर उसके प्रति वितृषणा उत्पन्न करती है, जो यही सिद्ध करता है कि रंग पूर्णतः भौतिक विज्ञान के सिद्धांतों पर आधारित है। ये सिद्धांत सिद्ध करता है कि रंग पूर्णतः भौतिक विज्ञान के सिद्धांतों पर आधारित हैं। शोध से प्राप्त आंकड़ो के संग्रहण, विश्लेषण और सांख्यिकी विवेचना के पश्चात् निष्कर्ष प्राप्त हुए जिनके आधार पर निम्न परिकल्पनाओं का प्रतिपादन किया गया–

प्रथम परिकल्पना सार्थक सिद्ध हुई, जिसके अनुसार आवासीय योजनाओं हेतु दिए गए रंग निर्देशों सम्बन्धी जागरूकता समाज के मध्यम वर्ग में नहीं है।

मध्यम वर्गीय परिवार आवास निर्माण के पश्चात् अपनी पंसद, रूचि आदि को ध्यान में रखकर घर की साज सज्जा के लिए रंगों का चुनाव कर लेते हैं। उन्हें वास्तु शास्त्र द्वारा दिए गए रंग–निर्देशों का कोई ज्ञान नहीं हैं। प्राप्त आँकड़ो से ज्ञात होता है कि 60 प्रतिशत मध्यम वर्गीय परिवार अपने अवास में रंग संयोजन स्वरूचि के अनुसार करते है तथा 30 प्रतिशत परिवार प्रचलित फैशन के अनुसार करते हैं। केवल 10 प्रतिशत परविार पत्रिकाओं में दिये रंग संयाजन के आधार पर रंगों का चुनाव अपने घर के लिये करते है।

द्वितीय परिकल्पना की सार्थकता सिद्ध हुई जिसके अनुसार वास्तु के प्रतिकूल रंग–संयोजन का मानव जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

11 प्रतिशत उत्तरदाता मानते है कि वास्तु सम्मत रंगों का उपयोग करके आवास का माहौल खुशनुमा बनाया जा सकता है। वहीं 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि यदि वास्तु द्वारा दिये गये रंग निर्देशों के अनुसार घर में रंग–संयोजन नहीं किया जाये तो भी परिवार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। 69 प्रतिशत उत्तरदाताओं को वास्तु के अनुसार रंग संयोजन के प्रभाव के बारे में कोई जानकारी नहीं है। रंगों के भी अपने कुछ मूलभूत सिद्धांत होते है। जिनको ध्यान में रखकर वास्तुशास्त्र में आवास हेतु कुछ विशिष्ट निर्देश दिए गए हैं। यदि रंगो का प्रयोग उनकी प्रकृति के अनुरूप नहीं किया जाता तो उनका विपरीत प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है।

सुझाव–: प्राचीन काल से ही वास्तु–शास्त्र के अनुसार आवास का निर्माण एवं साज–सज्जा को अहमियत दी जाती रही है। रंगों के सही संयोजन से घर में सुख–समृद्धि लाई जा सकती है इसलिए घर में वास्तु के अनुसार ही रंग–योजना चुनने का प्रयास करना चाहिए। * लाल रंग ऊर्जा का प्रतीक है, इस रंग का इस्तेमाल घर के दक्षिण या दक्षिण–पूर्वी हिस्से में करें। लेकिन अगर इस हिस्से में बेडरूम हो तो यहाँ लाल रंग के प्रयोग से बचें और हल्के पीले रंग का चुनाव करें। * हरा रंग यानि बुध से सम्बंधित रंग। इसी रंग का प्रयोग घर के उत्तर में करना चाहिए इससे आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार आएगा और आपको उन्नति के अवसर मिलेंगे। * पीले रंग का प्रयोंग घर के पूर्वोत्तर में स्थित किसी भी कमरे में किया जा सकता है। अगर यहाँ आपका ऑफिस, ड्राइंग रूम आदि है तो पीला रंग आपके लिए काफी शुभ होगा। अगर इस दिशा में स्टडी रूम, लायब्रेरी या बच्चों का कमरा हो तो गहरे पीले रंग की जगह हल्के पीले रंग का इस्तेमाल करें।

ध्यान रखें–: *दक्षिण पूर्व में कभी हल्के या गहरे नीले रंग का इस्तेमाल न करें। * पूर्वोत्तर या उत्तर दिशा में स्थित कमरे में कभी लाल या नारंगी रंगों का इस्तेमाल न करें, क्योंकि ये जल स्थान है और लाल रंग अग्नि का प्रतीक है। * एक ही बेडरूम की चारों दीवारों पर अलग–अलग कलर न करें इससे रिश्तों में तनाव, मन में उलझन या डिप्रेशन की स्थिति हो सकती है। *मकान की बाहरी दीवारों पर ग्रे, ब्राउन, या ब्लैक रंग का इस्तेमाल कभी न करें।

सन्दर्भ ग्रन्थ

* जैन कैलाशः बहुत कुछ कहते हैं रंगः जनसत्ता, नई दिल्ली, 18 मार्च, 2001 * रंगों का शरीर पर प्रभावः ग्वालियर सांध्यवार्ता, 17 सितम्बर 2004 * वास्तु के अनुसार रंगों का चुनावः मेरी सहेली, अगस्त 2008 * आचार्य महाप्रज्ञः आभामण्डल में रंगों का प्रभाव। * अग्रवाल एण्ड अग्रवालः वास्तु शास्त्र *द्विवेदी डॉ. भोजराजः रेमेडियल वास्तु–शास्त्र संस्करण 1998 * जैन ज्ञान सी–द लिटिल बुक ऑन वास्तु नई दिल्ली